जाह्नवी (मासिक) के नवम्बर 2009 अंक में प्रकाशित

लेख • आशुतोष भटनागर

गो-ग्राम यात्रा

एक विराट जनांदोलन

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा की शुरुआत 28 सितम्बर को कुरुक्षेत्र से हुई। 108 दिनों तक तक चलने वाली यह यात्रा पांच लाख भारतीय गांवों को स्पर्श करेगी। यह यात्रा गोवंश को आधार मानकर रची गयी परम्परागत भारतीय सामाजिक-आर्थिक संरचना के महत्व और प्रासंगिकता से लोगों को परिचित करा रही है।

शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारती

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा अपने प्रारम्भिक चरण में ही जनांदोलन का रूप धारण कर चुकी है। यात्रा से उपजे उत्साह और विचारों ने लोगों को आंदोलित करना शुरु कर दिया है। मुख्य यात्रा में शामिल संतों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के उद्बोधन लोगों को झकझोर रहे हैं। जबकि स्थान-स्थान पर निकलने वाली उपयात्राएं जमीनी स्तर पर जागरण कर रही हैं। दूसरी तरफ कार्यकर्ताओं की टोलियां घर-घर जाकर गोसंरक्षण और गोसंवर्धन का अलख जगा रही हैं।

पहले से निर्धारित पड़ाव स्थलों पर लोग घण्टों चिलचिलाती धूप में खड़े होकर यात्रा का इंतजार कर रहे हैं। निर्धारित मार्गो पर जगह-जगह होने वाले स्वागत कार्यक्रमों की वजह से यात्रा विलम्ब से पहुंच रही है। कुछ जगहों पर तो यात्रा के स्वागत कार्यक्रम निर्धारित हैं, लेकिन कुछ स्थानों पर स्थानीय जनसमुदाय स्व-प्रेरणा से ही बीच मार्ग में रोककर यात्रा का स्वागत कर रहा है। बच्चे, नौजवान, बुजुर्ग सभी इस यात्रा में उत्साहपूर्वक अपनी भागीदारी दर्ज करा रहे हैं। इस यात्रा ने मीडिया के एक वर्ग द्वारा गढ़ी गयी युवाओं की भारतीय संस्कृति विरोधी छवि को भी ध्वस्त कर दिया है। राजस्थान के श्री गंगानगर में यात्रा के स्वागत के लिए युवाओं का हुजूम उमड़ पड़ा। गोवंश के संरक्षण और संवर्धन के प्रति युवा जागरुक दिखे और वर्तमान परिस्थितियों में गोवंश की जरुरत की जानकारी से लैश भी। पंजाब के मुक्तसर जिले के मलौत मंडी में

मन को छू रही है
गाय और गांव की बात

यात्रा जैसे-जैसे आगे बढ़ती रही, उपयात्राएं मुख्य यात्रा में मिलती रहीं। कारवां आगे बढ़ता रहा। जम्मू और हिमालय के पहाड़ और घाटियों को लांघकर हिमालय की शिवालिक शृंखला में बसे उत्तराखण्ड राज्य में प्रवेश किया। छोटे-छोटे स्थानों पर भी नागरिकों का जोश देखते ही बनता था। वही शंखध्वनि, वही गंगा, गीता, गोमाता के जय के नारे, वही संतों का आह्वान और वही जनता का संकल्प। हर बार नये लोग, लेकिन वही श्रद्धा, वही उत्साह।

रूड़की में रात में हुई सभा अत्यंत प्रभावी थी। बी.टी. गंज का चौक खचाखच भरा हुआ था। छोटे मियां अब्दुल कादिर साबरी ने अपने भाषण में गो हत्या को इस्लाम विरोधी बताया। शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारती के उद्बोधन ने श्रोताओं को खासा प्रभावित किया।

मेरठ में त्यागी छात्रावास का मैदान जहां खचाखच भरा हुआ था वहीं गढ़मुक्तेश्वर में तो सैलाब ही उमड़ पड़ा। कार्यक्रम स्थल से लेकर गंगा तट तक गोमाता की जय का घोष गूंज रहा था। शंकराचार्य राघवेश्वर भारती के उद्बोधन के दौरान श्रोताओं की बैचेनी साफ देखी जा सकती थी। बीस हजार से ज्यादा लोगों की मौजूदगी में युवा संत अतुलकृष्ण महाराज ने जब लोगों को गो रक्षा का संकल्प कराया तो अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित हो गया।

आयोजित कार्यक्रम में ग्रामीणों ने यात्रा का भव्य स्वागत किया। गोवंश के संरक्षण के लिए यह यात्रा जिस ढंग से आम लोगों को संकल्प-बद्ध कर रही है, उससे आश बंधती है कि भारत के स्वत्व को स्थापित करने वाली शक्तियां अभी कमजोर नहीं हुई हैं। हरियाणा के हिसार में यात्रा के पड़ाव स्थल के आस-पास के गांवों की महिलाओं ने गोभक्तों के लिए 10 हजार भोजन के पैकेट बनाकर भेजे।

पंजाब में यात्रा के पड़ाव स्थलों पर गोवंश की उपयोगिता और धार्मिक महत्व के बताए जाने के बाद एक नए भावनात्मक ज्वार का उभार देखा गया। सुरक्षा की दृष्टि से अतिसंवेदनशील जम्मू में भी यात्रा का भव्य स्वागत हुआ। यात्रा जहां से गुजर रही है वहां पर गोवंश के संरक्षण और संवर्धन के प्रति नई चेतना का उभार हो रहा है।

भारतीयता की दीक्षा देने वाली यह एक अनूठी यात्रा है। एक ऐसी यात्रा जो गाय को प्रतीक मानकर व्यवस्था परिवर्तन के ध्येय के साथ चल रही है। स्वतंत्रता के बाद पहली बार एक यात्रा के जरिए विकास के मॉडल और सभ्यतागत सवालों पर विमर्श खड़ा करने के एक अनूठे प्रयोग की शुरुआत है यह यात्रा।

विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा की विधिवत शुरुआत 28 सितम्बर को विजयदशमी के दिन कुरुक्षेत्र से हुई। 108 दिनों तक तक चलने वाली यह यात्रा पांच लाख भारतीय गांवों को स्पर्श करेगी। यह यात्रा गोवंश को आधार मानकर रची गयी परम्परागत भारतीय सामाजिक-आर्थिक संरचना के महत्व और प्रासंगिकता से लोगों को परिचित करा रही है। इस यात्रा के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र में ही दो दिनों तक गायत्री एवं कामधेनु यज्ञ सम्पन्न किए गए।

मुख्य यात्रा में चलने वाले संत एवं सामाजिक कार्यकर्ता यात्रा के रात्रि-पड़ाव स्थलों और स्वागत स्थलों पर आयोजित जनसभाओं में गोसंरक्षण और गोसंवर्धन की अलख जगा रहे हैं। कुरुक्षेत्र से चलने के बाद प्रथम पड़ाव स्थल रोहतक में बोलते हुए प्रसिद्ध संत स्वामी अखिलेश्वरानंद ने कहा कि गोवंश हिन्दू परिवार व्यवस्था का अभिन्न अंग रहा है। उन्होंने कहा कि वोट बैंक की राजनीति के कारण गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया जा सका है। उन्होंने कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है और गौ कृषि की जीवनशक्ति है। सभा में बोलते हुए हरियाणा आर्य समाज के अध्यक्ष आचार्य बलदेव ने गोहत्या को हिन्दू समाज के माथे पर एक कलंक बताया। उन्होंने गोसंरक्षण और गोसंवर्धन के लिए युवाओं से आगे आने की अपील की। इसी सभा में गोकर्ण पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य राघवेश्वर भारती ने कहा कि विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व के कल्याण के ध्येय के साथ शुरु की गयी है। उन्होंने कहा कि विश्व को बचाने के लिए भारत का बचना जरुरी है। जगद्गुरु ने कहा इस यात्रा की सफलता और असफलता पर एक हद तक भारत का भविष्य भी निर्भर करेगा। उल्लेखनीय है कि श्री राघवेश्वर भारती स्वामी देश के एक ऐसे अदभुत संत हैं जिन्होने देश में इस जीवित गाय की सभी नस्लों को बचाकर रखा हुआ है। आजादी के समय देश में गाय की लगभग 100 नस्लें मौजूद थी लेकिन आज उनमें से केवल 33 नस्लें ही

बचीं हैं और उनमें से भी तीन-चार नस्लें ऐसी हैं जिनकी दो चार गाय ही बची हैं। यदि इसी समय उनके संवर्धन हेतु प्रयास नहीं हुआ तो आने वाले कुछ ही वर्षों में भी लुप्त हो जाएंगी। इसी ध्येय के साथ श्री राघवेश्वर भारती जी के विराट संकल्प के कारण यह यात्रा देशभर में जनजागरण का काम कर रही है।

2 अक्टूबर को सिरसा में स्वागत सभा में बोलते हुए संघ के अखिल भारतीय ग्रामीण विकास प्रमुख डा. दिनेश ने कहा कि विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा गांधीजी के ग्राम स्वराज के स्वप्न को पूरा करने का एक नूतन प्रयास है। गो ग्राम यात्रा के जरिए गोवंश और कृषि आधारित भारतीय सामाजिक-आर्थिक संरचना को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। आंकड़ों का हवाला देते हुए डा. दिनेश ने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की 90 फीसदी जनसंख्या गांवों में बसती थी। अब नीति-नियंताओं की आत्मघाती नीतियों के कारण गांवों में रहने वालों की संख्या 70 फीसदी रह गयी है। रोजगार के अभाव में ग्रामीण शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। गांव उजड़ते जा रहे हैं और हमारे शासक इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को विकास का नाम दे रहे हैं।

2 अक्टूबर को ही हिसार में आयोजित स्वागत सभा में विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के पश्चिमी विभाग के अध्यक्ष रामचंद्र ने कहा कि भारतीय समाज की बुद्धिमत्ता को जागृत करने का आधार गोवंश है। गोवंश से हमको अच्छे स्वास्थ्य के साथ अच्छे संस्कार भी मिलते हैं। स्वास्थ्य और संस्कार के संगम से बुद्धिमत्ता पैदा होती है। इसी सभा में बोलते हुए नागपुर गो अनुसंधान केन्द्र के सुनील मानसिंहका ने भारत में किसानों की बढ़ती आत्महत्या का कारण गो हत्या को बताया। हिसार के लोग इस यात्रा को लेकर कितने उत्साहित थे इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि ग्रामीण महिलाओं ने गोभक्तों के लिए भोजन के दस हजार भोजन के पैकेट अपने घरों से बनाकर वितरित किये।

3 अक्टूबर को राजस्थान के श्री गंगानगर में यात्रा के स्वागत के लिए आयोजित एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख सीताराम केदिलाया ने विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा को भारतीय स्वत्व को स्थापित करने का प्रयास बताया। उन्होंने कहा कि स्वंतत्रता प्राप्ति के बाद नीति -निर्माण की प्रक्रिया में भारतीय प्रकृति और संस्कृति का ध्यान नहीं रखा गया, जिसके कारण भारत का परम्परागत सामाजिक ढांचा चरमरा गया है। श्री केदिलाया ने कहा विश्व मंगल गो-ग्राम यात्रा भारतीय जनमानस में परिवर्तन लाने का एक महाभियान है। यह यात्रा भारतीयों को आत्मचिंतन और आत्मदर्शन के लिए प्रेरित करेगी। श्री गंगानगर में यात्रा के स्वागत के लिए आयोजित कार्यक्रम में युवाओं की सहभागिता देखने लायक थी।

03 अक्टूबर को ही संगरिया में आयोजित स्वागत सभा में बोलते हुए विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा के राष्ट्रीय सचिव शंकर लाल ने भारत की सांस्कृतिक आर्थिक बुलंदियों के लिए गोवंश के संरक्षण और संवर्धन को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि स्वावलंबन के लिए गोवंश का संरक्षण आवश्यक है। इसी सभा में बोलते हुए गोकर्ण पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य राघवेश्वर भारती ने कहा कि जो संत संकट के समय समाज का साथ नहीं देता वह संत नहीं है।

04 अक्टूबर को यात्रा का बरनाला पहुंचने पर स्थानीय लोगों ने भव्य स्वागत किया। शहर में प्रवेश करने पर गोभक्तों ने कई स्थानों पर पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत किया। गोभक्तों की सभा को सम्बोधित करते हुए संत सूर्य प्रताप सिंह ने कहा कि पर्यावरण संकट के वर्तमान दौर में गाय को बचाने का मतलब कुदरत को बचाना है।

05 अक्टूबर को अमृतसर की स्वागत सभा में स्वामी परमानंद ने कहा है कि भारतीय गांव शहरों के आंतरिक उपनिवेश बन गए हैं। भारत विदेशों का गुलाम बनता जा रहा है और गांव शहरों के गुलाम बनते जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि गाय की अनदेखी के कारण ही ग्राम

पिछड़ते जा रहे हैं और ग्रामीणों का शहरों की तरफ पलायन बढ़ता जा रहा है। स्वामी परमानंद ने कहा कि गांव की सम्पदा मानी जाने वाली गायों की स्थिति दयनीय हो गयी है। गोदुग्ध बाहर बेचा जा रहा है। शहर लूट रहा है, गांव लुट रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश के स्वस्थ विकास के लिए ग्रामों का स्वावलम्बी होना आवश्यक है।

06 अक्टूबर को जम्मू में भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच हुए स्वागत कार्यक्रम में गोकर्ण पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य राघवेश्वर भारती ने गोवंश को खुशहाल और समृद्ध जीवन का आधार बताया। स्थानीय परेड ग्राउंड में बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय इतिहास साक्षी है जब तक इस देश मे गोवंश का विकास, संवर्धन और पूजन होता रहा, तब तक यह देश आर्थिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ रहा।

07 अक्टूबर को पठानकोट में आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए स्वामी अखिलेश्वरानंद ने कहा कि गाय भारतीय समाज-जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श और प्रभावित करती है। गाय में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, चिकित्साशास्त्र का समावेश है। स्वामी जी ने कहा कि गाय अपने आप में एक सम्पूर्ण विज्ञान है।

08 अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश के शिमला में आयोजित स्वागत सभा को सम्बोधित करते हुए ज्वालादेवी मंदिर के महंत श्री सूर्यनाथ ने कहा है कि गो ग्राम यात्रा मानवता के अस्तित्व को बचाने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि भारतीय मान्यताओं के अनुसार मानवता के अस्तित्व का मूल आधार गोवंश ही रहा है और गोवंश की हत्या मानव अस्तित्व की हत्या है। पहाड़ों की गोद में स्थित शिमला में जनभागीदारी उत्साह बढ़ाने वाली रही। उन्होंने कहा कि यदि हमारे देश का किसान आधुनिक उपकरणों के बजाय गोवंश पर आधारित कृषि करे तो भारत को कभी भी अन्य देशों से अनाज आयात करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यात्रा का पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल प्रदेश में जोरदार स्वागत हुआ। कांगड़ा से चलने के बाद हमीरपुर और विलासपुर जिलों में ग्राम यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। विलासपुर जिले में लोगों द्वारा यात्रा का स्वागत पारंपरिक रणसिंहा वादन द्वारा किया गया। जगह-जगह पर यात्रा के लिए आयोजित कार्यक्रमों में संत गोवंश की उपयोगिता बताते हुए लोगों को गोपालन व गोसंवर्धन हेतु संकल्प भी करा रहे हैं।

09 अक्टूबर को यात्रा हिमाचल प्रदेश के सोलन, परवाणु और चण्डीगढ़ होते हुए देर शाम हरियाणा के यमुना नगर पहुंची। यमुनानगर मे विशाल स्वागत सभा को संबोधित करते हुए शंकराचार्य राघवेश्वर भारती स्वामीजी ने कहा है कि विश्व मंगल गो ग्राम यात्रा का उद्देश्य वास्तविक भारत की खोज करना है। उन्होंने गो माता को भारतीय अस्मिता का प्रतीक बताते हुए कहा कि गोवंश की संख्या में कमी होने के कारण ही हमारे धर्म व संस्कृति का पतन हो रहा है। स्वामी अखिलेश्वरानंद ने कहा कि देश में जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है उसी गति से गोवंश की संख्या भी बढ़नी चाहिए तभी जीवन का संतुलन ठीक रहेगा। ●

■ बहस

हमारी सरकार ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?

गो-ग्राम यात्रा आज की प्रचलित ग्राम-नगर विकास शैली से भिन्न विचार लेकर गांव-गांव जा रही है, जिससे समाज में एक बहस प्रारम्भ हो रही है।

काशी के निकट लालगंज के नजदीकी गांव के निवासी रामकेवल यादव कहते हैं-'हमें जो बताया गया, वही हम करते रहे। सरकार ने हमें बताया कि पशुओं की नस्ल सुधार से ज्यादा दूध मिलेगा, हमने जर्सी गाय पालना शुरू किया। सरकार ने हमें कहा यूरिया डालो, पैदावार बढ़ेगी। हमने रासायनिक खाद का प्रयोग किया। सरकार ने ही किसान गोष्ठियों का आयोजन किया, हमें कीटनाशक इस्तेमाल करना सिखाया। उसने ही हमें उन्नत बीजों और नकदी फसलों की जानकारी दी। अब आप लोग कह रहे हैं कि वह सब गलत था।'

क्या आपको लगता है कि सरकार की सलाह पर चल कर आपको फायदा हुआ है और यात्रा में आये लोग जो कह रहे हैं वह गलत है? इस प्रश्न के उत्तर में एक अन्य किसान अजुध्या कहता है-'यात्रा के लोग वही कह रहे हैं जो हमारे बाप-दादा कहते रहे। शुरू में हमें थोड़ा लाभ तो जरूर हुआ पर धरती बंजर हो गई। अब जिस हिसाब से खाद डालते हैं उसी हिसाब से उपज हो जाती है।' तभी एक अन्य ग्रामीण रमाकर राय बोल उठता है-'बात तो आपकी ही ठीक है पर समझ में नहीं आता कि हमारी सरकार ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?'

यह यात्रा अवाम को मथती हुई आगे बढ़ रही है। बात पर्यावरण की भी होती है और कीटनाशकों के बढ़ते दुष्प्रभाव की भी। किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या पर भी चिन्ता व्यक्त की जा रही है तो जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं पर भी चर्चा होती है।

सवाल जरूर जन्म ले रहे हैं, किन्तु अपने समग्र रूप में यात्रा सकारात्मक है। समस्याओं से त्रस्त समाज को यह विद्रोह की ओर नहीं ले जाती बल्कि संस्कृति, परम्परा और लोकज्ञान के वैज्ञानिक कसौटी पर खरा साबित होने वाले लाभकारी तत्वों को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करती है, सरलता से अपनाए जा सकने योग्य पर्याय देती है। इसीलिए आम आदमी की भाषा में की जा रही गाय और गांव की बात लोगों के मन को छू रही है।

इस प्रकार इस यात्रा से समाज के सम्मुख एक बहस खड़ी हो गयी। किसानों ने अपनी बदहाली के लिए अन्तर्मुखी हो कर सोचना प्रारम्भ किया है।

जाह्नवी (मासिक)
डब्ल्यू जेड-41, दसघरा
नई दिल्ली-110012
फोन-(011)25844818, 25845818, 25845119
E-mail
Jahnavi_m_p@yahoo.co.in